'उत्तरा'क कविक परिचय

'उत्तरा' मैथिली साहित्यक एक खण्डकाव्य पोथीक नाम थिक, जकर रचयिता छथि श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'। श्री सुमन मैथिली साहित्यमे एक एहन नाम थिक जे मुख्यतः कविक रूपमे ख्याति पओने छथि ओना ई बात भिन्न जे ओ एक ललित गद्यकार, सूक्ष्म समालोचक ओ मैथिली दैनिक 'स्वदेश'क सम्पादकक रूपमे सेहो जानल-मानल जाइत छथि।

समस्तीपुर जिलाक वल्लीपुर नामक गाममे हिनक जन्म आश्विन शुक्ल पंचमी तिथिकेँ १९१० ई०मे भेलनि।

सुमनजी संस्कृत साहित्यक अत्यन्त मेधावी छात्र छलाह एवं कविशेखर बदरीनाथ झाक शिष्यत्वमे साहित्याचार्य भेलाह। अपन जीविकाक प्रारम्भ पत्रकारितासँ कयल। १९३५ ई०मे 'मिथिला मिहिर'क सम्पादक नियुक्त भेलाह जे १९५४ पर्यन्त धरि रहलाह। एहि अवधिमे हिनक यशस्वी सम्पादकत्वमे एहि पत्रिकाकेँ पर्याप्त ख्याति भेटलैक। कतेको लेखक-कविकेँ एहि पत्रिकाक माध्यमे साहित्य संसारमे सुमनजी अनलनि ओकरा प्रोत्साहन-प्रश्रय देलनि, ओकर प्रतिभाकेँ तरासि-तरासि कऽ चमकौलनि-दमकौलनि। वस्तुतः मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे हिनक ओहने स्थान छनि जेहन हिन्दी-पत्रकारिताक क्षेत्रमे स्व० महावीर प्रसाद द्विवेदीक छलनि। तेँ ई अपन समकालीनक बीच सम्पादकजीक नामेँ जानल जाइत छथि। हिनक सम्पादकत्वमे १९३५ ई०मे प्रकाशित 'मिथिला मिहिर'क 'मिथिलांक' आइयो अपन अद्वितीय स्थान रखैत अछि। मैथिली साहित्यक वरेण्य साहित्यकार डॉ० श्री जयकान्त मिश्रक शब्दें—
"a Store house of information on Mithila and her culture."

एहि अवधिमे १९१० ई०मे सुमनजी चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगामे मैथिलीक प्राध्यापक नियुक्त भऽ गेलाह आ १९७२ ई०मे 'पयस्विनी' नामक कविता-संग्रह पर भारत-सरकारक सर्वोच्च साहित्यिक संस्था 'साहित्य अकादमी' सँ पुरस्कृत भेलाह। ओना ई बात भिन्न जे हिनक एहि पोथीक तुलनामे आने किछु पोथी उत्तम छनि)। तत्पश्चात् राजनीतिमे सक्रिय रूपसँ कूदि पड़लाह। संघर्ष करैत पराजयक मुँह देखैत एक बेर बिहार विधान सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह एवं एक बेर लोक सभाक सेहो। तकर बादक माध्यावधि चुनावमे पराजय भऽ जयबाक बाद 'स्वदेश'क पुन. प्रकाशन प्रारम्भ कऽ देल आ ओकरा सम्पादन कार्यमे पूर्ण मनोयोगसँ लागि गेलाह। एकर अतिरिक्त एहि बेर 'साहित्य-अकादमी'मे मैथिलीक प्रतिनिधि सेहो चुनल गेलाह अछि।

सुमन जीक मैथिली साहित्यमे महत्वपूर्ण स्थान अछि। मैथिली समालोचक लोकनि हिनका प्राचीनता एवं नवीनताक सन्धि-स्थलपर मानल अछि। स्व० रमानाथ झाक शब्दें "ई प्राचीन अधिक छथि नवीन कम। आधुनिक सोलहो आना छथि। हिनक आधुनिकता थिक प्राचीनताक नवीनीकरण।" प्रतिपदा पुस्तकके एहि दृष्टिकोणसँ देखल जा सकैछ। 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे' 'श्मशान', 'शरद' शीर्षक कवितामे एक दिसि प्राचीन भावना व्यक्त भेल अछि तँ दोसर दिसि 'कविताक आह्वान', 'हलधर', 'विजया-पर्व' 'यौवन-स्मृति' आदिमे नवीन विचारक अभिव्यक्ति भेल अछि। 'हलधर' शीर्षक कवितामे कवि हरवाहक प्रशंसामे लिखैत छथि—

"समता अहँक कतयसँ करता,
जनकपूरक श्रीमान्।
किन्तु विदेह वँह कहबै छथि,
माटिक अहाँ किसान॥

हिनका प्रसंग जे कहल गेल अछि जे "ई संस्कृतकें गला कऽ मैथिलीक शृंगार करैत छथि" से उचिते। सुमनजी अपन विशिष्ट प्रतिभाक कारणें अपन चातुरी द्वारा संस्कृतक विषय-वस्तुकें वा प्राचीन विषय-वस्तुकें एहि रूपें राखि दैत छथि जे ओ आधुनिकताक उदाहरण सन भ' जाइत अछि से हिनक कृति सभमे देखल जा सकैछ खाहे ओ 'अर्चना' होअय वा 'उत्तरा', 'पयास्विनी' होअय वा 'प्रतिपदा'। हिनक काव्यमे भारतीय संस्कृतिक प्रतिविम्ब सेहो भेटैत अछि। प्रो० मेधाविथि हिनका सम्बन्धमे उचिते कहने छथि जे "हिनक 'अर्चना' मैथिली मन्दिरक एक भक्ति-प्रधान काव्य अछि। 'गंगा-तरंगिणी' 'मैथिली वन्दना' ओ मिथिला-महिमा' (अर्चनामे संग्रहीत) ई तीनू कविक एहन कृति अछि जकर आधार मूलत: सांस्कृतिक अछि। परन्तु एकर वर्णनमे कवि जाहि पौराणिक गाथाक उल्लेख कयने छथि ओ इतिवृत्त मात्र नहि भ' अपन काव्य-चमत्कारक बलें अत्यन्त आकर्षक ओ महत्वपूर्ण भ' गेल अछि।"

वस्तुत: हिनक 'गंगा-तरंगिणी' पढ़ैत काल के एहन मैथिल होयत जे तरंगित नहि भेल होयत आ' 'साओन-भादव'क हिनक अद्भुत कल्पनापर मुग्ध नहि भेल होयत।

हिनक साहित्य-साधना बहुमुखी अछि। साहित्यक प्राय: अधिकांश विधापर हिनक सशक्त लेखनी चलल अछि। एतबे नहि, संस्कृतमे एक दिसि जौं ई कोमलकान्त पदावलीक रचना कयल तँ हिन्दीमे

ललित निबंधक। धरि मैथिलीमे एहि दुनू प्रकारक रचनाक संगम अछि संगहि हिनक साहित्य-साधना एतेक प्रखर अछि जे हिनका अपन युगक कवि सभसँ फराक स्थान दिआ देने अछि। हिनक कवित्व प्रतिभाकेँ स्व० रमानाथ बाबू देखि-चीन्हि हिनका 'कविक कवि' कहि देने छथिन। हुनकहि शब्देँ "ई कविक कवि थिकाह, मैथिलीक बृहत्त्रयीमे हिनको नाम आओल। -हिनक कवितामे श्री ईशनाथ झाक मधुरता नहि छन्हि, श्री मधुप जीक कल्पनाक कमनीयता नहि छन्हि, परन्तु कवित्व-प्रतिभाक परिपक्वता, उक्ति प्रौढ़ता, कल्पनाक दृढ़ता एवं विच्छित्तिक विन्यासमे ई जेहन श्लाघनीय छथि तेहन बड़ विरल कवि भेटताह।" वस्तुतः हिनक कविताक वा गद्योक रसास्वादन करैत काल एकटा कविक हृदयक अपेक्षा रहैत अछि।

श्री सुमनजी मुख्यतः एक रस सिद्ध कवि छथि। कविता हिनक जीवनक संग एकाकार भ' गेल अछि। जेँ हेतु ई संस्कृत-साहित्यक विद्वान् छथि तेँ ओहि विद्वताकेँ मैथिलीमे सेहो देखाइये देलनि अर्थात् ओहि संस्कारकेँ दाबि कऽ नहि राखि सकलाह तेँ हिनक रचनामे संस्कृतक काव्य-गरिमा सहजहिँ भेटि जाइछ। ओना इहो बात सत्य जे श्री सुमन जीक दृष्टि आधुनिक छनि तेँ ओहिमे आधुनिकताक प्रति आग्रह सेहो भेटैत अछि। 'प्रतिपदा'क हलधर शीर्षक कवितामे कवि हरवाहक प्रशंसामे लिखैत छथि --

"समता अहाँक कतयसँ करता,
जनकपुरक श्रीमान्।
किन्तु विदेह वैह कहबै छथि
माटिक अहाँ किसान॥

हिनक विलक्षण कवित्व-प्रतिभा एवं कल्पना-शक्तिक परिचय लेल एकटा 'साओन भादव' पोथिए मात्र पर्याप्त अछि। एकेटा वर्षा-ऋतुकेँ कवि नओ रसक रूपमे चित्रित कऽ एकटा अपूर्व कृति मैथिली-साहित्यकेँ देने छथि। उदाहरणार्थ एक-दू टा रसकेँ द्रष्टव्य थिक। अद्भूत रसक रूपमे कवि वर्षा-ऋतुकेँ चित्रित करैत लिखैत छथि जे—

"दिनमे रातुक दृश्य तमोमय
विद्युत् बल निशि दिवस ज्योतिमय

माँझ-माँझमे साँझक सुन्दर
दृश्य देखाए हृदय दुलसाबए॥

सूर्य चन्द्र तारावलीक कए लोप
लोककेँ विस्मित करैत नव।

इन्द्रजालिनी प्रकृति नटीकेर
चमत्कार ई साओन-भादव।

—(साओन भादव)

तँ दोसर दिसि वीर रसक रूपमे वर्षा-ऋतुक कल्पना सेहो द्रष्टव्य थिक—

"नील नील घन घटा जकर अछि
ढाल, खड्ग विद्युत् कर-गत अछि
ग्रीष्म अरिदलक छिन्न अङ्गसँ
रक्त-धार की वरसि रहल अछि ?
नभसँ लऽ वसुधा धरि सगरो
रण-सागर उमड़ल ई अभिनव
नव-उत्साह-सजल पावस केर
समर-भूमि ई साओन-भादव ।

सुमन जी संस्कृतक स्थिर कछोरसँ फराक आधुनिकता दिसि ओतबे दूर धरि जाइत छथि जतयसँ घुरि कऽ अयबामे कठिनता नहि होइन । अर्चना पोथी द्रष्टव्य थिक जाहिमे (गंगा तरंगिणीमे) हिमालयकेँ महाकविक उपाधिसँ विभूषित करैत भारतीय संस्कृतिक पौराणिक गाथाक उल्लेख करैत कवि सर्वथा नवीनता एवं मौलिकताक परिचय देल अछि । द्रष्टव्य थिक कवितांश—

'अहँ हिमनगपति महाकविक उर द्रवित निरंतर
नित नव-नव हिम भाव सजल कविता चिर सुन्दर
ध्वनि-रस गतिमय एक, एक पद कणसँ सुरसरि
युग-युगसँ छी दैत अमृत संदेश विश्व भरि
छाया-पथक विहारिणी, निधि अनन्त गति-गामिनी
करब भाव उर्वर हमर उर-मरु-शीतल-वाहिनी

एहि ठाम अलंकार-विधान, वर्णनात्मक ढंग, शब्द विन्यास आदिमे पूर्णतः संस्कृतक गौरवमयी परम्पराकेँ अक्षुण्ण राखल गेल अछि । गति, ध्वनि, रस एवं पदमे श्लेष अलंकारक अपूर्व निर्वाह भेल अछि मुदा हिमालयकेँ महाकविक उपाधिसँ सम्बोधित कऽ हुनका लोक कल्याणकारी मुक्ति साम्य संदेश दात्री रूप दऽ एवं हुनक हृदय-प्रदेशक निःसृतकेँ कविताक रूप दऽ एक विलक्षण कल्पनाक समावेश कयल गेल अछि । एही विलक्षणतामे सुमनजीक आधुनिकता निहित अछि । चमत्कारपूर्ण सूक्ष्म कल्पनासँ निबद्ध हिनक रचनामे किछु नव बात सिद्ध करबाक, किछु नव बात उत्पन्न करबाक अपूर्व क्षमता छनि । हिमालयक सम्बन्धमे केहन नव एवं विलक्षण कल्पना छनि से एकटा निम्न पदांशमे सेहो द्रष्टव्य थिक—

"जन्म जन्म संचित हिमवत्तक पुण्यक लेखा ।
भारत-भूमिक भाल बीच भाग्यक शुभ-रेखा ॥

गंगाक सम्बन्धमे केहन अपूर्व कल्पना छनि सेहो द्रष्टव्य थिक—

शिव की सकितथि विष पचाय,
यदि लितथि नहि माथे ।

जैतथि सिन्धु सुखाय,
बाड़वानलहिक हाथे ॥

एतबे नहि मिथिलाक सीमाक सम्बन्धमे सेहो हिनक कवितांश द्रष्टव्य थिक—

तिरहुत अछि वास, चास हिमवत सीमा धरि।
अपन आङ्गनक टाट बढ़ल बंगक खीमा धरि॥

एहि अर्चना पोथीमे श्री सुमनजी गंगा, ओ मिथिला इत्यादिक वन्दना ओ हुनक चरित्र-चित्रण उत्कृष्ट रूपेँ कयने छथि।

सुमनजीक विषय-क्षेत्र बड़ व्यापक अछि। प्रायः कोनो एहन वाद-प्रवाद होयत जे हिनक लेखनीसँ बचि गेल होयत। 'पयस्विनी'मे कवि कानूनक मानवीकरण (Personlficton) करैत लिखैत छथि—

"कानून आउ अहाँक आनन हम चानन छिटका दी।
मथिन वदन धो पोछि केश विखरल-निखरल छिन्न दी।

सुमनजीक काव्यमे वर्णनक पाण्डित्य कारणेँ ओ सर्वसाधारणकेँ बोधगम्य नहि होइछ। ओ महाकवि गोविन्ददास वा अपन गुरु बदरीनाथ झा जेकाँ तत्समबहुल शब्दक प्रयोग करैत छथि। तेँ ओहिमे उपरोक्त कवि द्वयक समान प्रसाद गुणक अभाव रहि जाइत अछि। ओना इहो बात सत्य जे शब्दक लेल अपना हृदयकेँ ओ विशाल रखने छथि। कखनो उर्दू-फारसी ओ शब्दक प्रयोग करैत हिच-किचाइत नहि छथि। जेना—

'इन्द्रप्रस्थ धरि अहँक हुकूमति खेलहुँ अहँक गुलाम'त कखनो सरलसँ सरल मैथिली शब्दक प्रयोग सेहो करैत छथि। जकर प्रमाणार्थ 'कथा-यूथिका'क अधिकांश कविताकेँ देखल जा सकैछ। कहबाक तात्पर्य जे भाषा भावक अनुरूप प्रयोग करैत छथि।

हिनक काव्यमे युगक प्रतिविम्ब विलक्षण रहैत अछि। द्रष्टव्य थिक 'प्रतिपदा' पोथीक विम्न कवितांश जाहिमे कवि बाढ़िसँ त्रस्त एक अनाथ-विधवाक दयनीय दशाक चित्रण कतेक मार्मिक ढगेँ कयल अछि—

'पति परलोक बसल, घर उजड़ल,
चिन्तित चित्त अधीर।
मास-मासमेँ जकर कमासुत
सुत ज्वर गलित शरीर॥
जकर अन्नपूर्णा भसिएलै,
कौशिकी मझधार।
जीवन-तट पर एक शब्द
सुनइछ जे हाहाकार॥

ओहि अनाथ विधवाक अश्रुहिक
सगरो उमड़ल बाढ़ि।
करुण शब्दें कविता कनइछ
कौशिकीक तट ठाढ़ि॥

एकर अतिरिक्त कवि प्रकृतिक उपासना सेहो पूर्ण मनोयोगसँ कयल अछि। ओहिमे प्रकृतिक मनोरम चित्रण भेटि जाइत अछि। 'शरद' ऋतुकें एक किशोरीक रूपमे चित्रण कतेक मोहक, कतेक आकर्षक ओ कतेक आह्लादक भेल अछि, से द्रष्टव्य थिक—

'चरण-शतदल कर-कमल मुख-चन्द्र रश्मि पसारि।
नयन-खंजनि चटुल संवर्धित शरद सुकुमारि॥
नील शैवालक शिरीरुह खचित कमलक फूल।
कुमुद दन्तावलि विशद सरिताक शुभ्र दुकूल॥

आ' पावसक वर्णन एक गोट त्यागी ओ तपस्वीक रूपमे कयलनि अछि। जेना—

जगकें सजीवकें जीवन दए आनक हित निजतन।
बलिकें भरिकें पाबल अन्द्रक अन्त दऽ बलिदानी मृत्युञ्ज॥

सुमन जी प्रकृतिक चित्रण अत्यन्त सहज एवं स्वाभाविक ढंगें कयलनि अछि। यथार्थमे मनुष्यक ई इच्छा रहैत छै जे मनुष्य किछु कालक हेतु सांसारिक मायाजाल, बाह्याडम्बर, टोप-टहंकारसँ मुक्त भऽ प्रकृतिक मनोरम एकान्त वातावरणमे अपन किछु समय बिताबय चाहैत अछि। द्रष्टव्य थिक निम्न कवितांश—

"हम चलब नगर केर पार गामसँ दूरे।
अछि बसल वनक सीमा सुषमासँ पूरे॥
ने धवल महल, से भीत-टाट केर घेरा।
अछि जतय मुक्त प्रकृतिक युग-युगमें डेरा॥

सुमनजीक नवीनता हुनक प्रगतिशीलतेमे छनि। युगक धाहसँ ओ प्रभावित छथि। दत्तवर्त्ती महाकाव्य (जे कि ओजपूर्ण, सांस्कृतिक दृष्टिसँ अनुपम, सृष्ठु वर्णन, प्रवाहमय भाषा एवं प्रौढ कल्पना शक्तिसँ पूर्ण अछि)मे लिखैत छथि—

"तें सम्प्रति थिक उचित शत्रु संहार।
ताहि लेल चाही सैनिक सभार॥"

एकर अतिरिक्त हिनक 'विद्यापति-पुरस्कार' (जे कि मैथिली अकादमी, पटनासँ देल जाइछ प्रत्येक वर्ष एक पोथीपर)सँ पुरस्कृत खण्ड-काव्य 'उत्तरा'क कथावस्तु महाभारत पर आधारित रहितहुँ

एहिमे कविक मौलिक दृष्टिक निदर्शन नीक जेकाँ भेल अछि। कवि अपन सूक्ष्म मौलिक दृष्टिक उद्भावना एहि पोथीमे विलक्षण ढंगेँ कयल अछि। द्रष्टव्य थिक निम्न पद्यांश जाहिमे कवि पाण्डवक संग द्रौपदीक चित्र बिनु नामक उल्लेख कयनहि स्पष्टताक संग केहन विलक्षण ढंगेँ कयल अछि—

"पंच पुरुष छथि जनिक संगमे श्यामा ललना एक।
पंच तत्त्व जनु संगत एकत प्राण शक्तिहिक टेक॥
प्रथम प्रतिष्ठित पुरुष शान्त निर्मल जनु गगन उदार।
दोसर छथि उद्वेगी पवन समान शक्ति संचार॥
तेसर तेजस्वी जनु अग्नि-शिखा उद्दीप्त शरीर।
अपर युगल छथि धरणि-धारणा प्रकृति जनु शीत नीर॥
संग तनिक वानता विलक्षण चेतनाक जनु अंश।
आयल छथि विराट पुरुषक जनु सन्निधि-जीव चिदंश॥

उत्तरा, द्वितीय सर्ग, पृ० १७ प्रो० मेधातिथि उचिते हिनका सम्बन्धमे कहने छथि जे "सुमनजीक काव्य साधनापर विचार कयने देखब जे आधुनिक युगक विविध काव्य-धाराक सामञ्जस्य यदि कोनो कविमे अछि तँ ओ सुमनजी छथि।

एहि सभक अतिरिक्त एक प्रकारेँ अछि हिनक साहित्यिक प्रतिभा निखरल अछि ओ अछि 'भूमिका लेखन'मे। मैथिलीमे जतेक पोथीक भूमिका ओ लिखने छथि ततेक के आन नहि। ओहि सभकेँ यदि एक ठाम कऽ देल जाय तँ एक विलक्षण आलोचनाक पुस्तक भऽ जायत। आ दोसर हिनक ललित गद्य लिखबाक छटामेँ सेहो परिचय भेटत। हिनक गद्यक एकटा बानगी द्रष्टव्य थिक जे 'पयस्विनी' शब्दक एवं अर्थक सार्थकताक सम्बन्धमे ओहि पोथीक 'भाव-भूमि'मे लिखने छथि—"पय पानिओ थिक, दूधो थिक, पयस्विनी विन्दुवाहिनी सरितो थिक, दुग्धारिणो धेनुओ थिक। पयोधर मुक्ताहार ऋंगारो-बम-दूधक धार उरोजो थिक, गगन बिहारी तृण-तृणे जीवन संचारी पावसी मेघो थिक।" तेँ पयस्विनीक सम्बन्धमे डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' उचिते लिखने छथि जे "एहि संग्रहमे सुमनजी राष्ट्रवादी सांस्कृतिक भावधाराक प्रतिपादन विविध रीतिएँ कऽ अपन उच्च महाकवित्वक सुन्दर निदर्शन कयल अछि परन्तु से मननीय अछि, सहज रूपसँ आस्वादनीय अछि।"

वस्तुतः हिनक की पद्य, की गद्य सभमे काव्य-कलाक विलक्षण चमत्कार, गूढ़ार्थ-बोधक धरि विषयक अनुरूप जे भारविकक अर्थगौरव स्मरण करा दैछ। हँ, शिल्प-शैली प्राञ्जल आ वर्णन-विन्यासक विलक्षणता सर्वत्र भेटैछ।

Prof. (Dr) Birendra Jha, Dept. of Maithili, PU